B.A. History Hon's, Part: I
Paper: I, Unit: I, Date: Lecture No.: 15
09.12.2020

Lession: प्रतिहार शासक मिहिर भोज प्रथम की उपलब्धियाँ

हर्षवर्द्धन की मृत्यु के बाद पश्चिम भारत में गुजरात के गुर्जर-प्रतिहार राजवंश का उदय और उनके साम्राज्य का प्रसार भारत के प्रारम्भिक मध्यकालीन इतिहास की एक प्रमुख घटना मानी जाती है। आठवीं सदी से दसवीं सदी के मध्य महान प्रतिहार शासकों ने पालों को पराजित तथा राष्ट्रकूटों को दक्षिण भारत में परिसीमित कर उत्तर भारत के विशाल भू-भाग में साम्राज्य निर्माण कर हो भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में अपना महत् योगदान दिया। यह संभव हो पाया था, कि महान प्रतिहार शासक मिहिर भोज, प्रथम के सफल नेतृत्व में, जो इतिहास में राजा भोज के नाम लोकप्रिय है। मिहिर भोज प्रथम एक वीर योद्धा, कुशल सेनानायक और सफल साम्राज्य निर्माता माना जाता है, जिसने कन्नौज को अपने साम्राज्य की राजधानी बनाकर सम्पूर्ण उत्तर भारत को अपने अधीन किया और इस तरह हर्षवर्द्धन की स्मृति को ताजा ही नहीं किया, अपितु उसके अंतिम हिन्दू सम्राट की उपाधि को मजबूती से चुनौती दी।

गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के नागभट्ट ने उज्जैन को केन्द्र बनाकर पूर्वी गुजरात तथा दक्षिणी राजस्थान को अपने अधीन किया और प्रतिहार राजवंश की स्थापना की। उसके दो क्रमिक उत्तराधिकारियों क्रमशः पुत्र वत्सराज और पौत्र नागभट्ट द्वितीय ने भारत में पाल और राष्ट्रकूट शक्तियों से हार-जीत के साथ मुकाबला करते हुए पश्चिमी भारत में गुजरात, राजस्थान और विन्ध्य के क्षेत्रों में अपने साम्राज्य का विस्तार किया। किन्तु प्रतिहार राजवंश के तृतीय शासक रामभद्र के समय प्रतिहार शक्ति का काफी क्षरण हो गया। मिहिर भोज प्रथम ने 836-38 के दौरान प्रतिहार राजवंश की गद्दी सम्भाली जब प्रतिहार शक्ति की हालत नाजुक थी किन्तु उसके पास अपने दादा-परदादा जी की समृद्ध विरासत भी थी, जिसके पुनरुद्धार का गुरुतर दायित्व उसके कंधों पर था। उसे न केवल उत्तर भारत से पालों तथा राष्ट्रकूटों को निष्काषित करना था, अपितु पश्चिम भारत में अपने वंश परम्परा को आगे बढ़ाना था। मिहिर भोज के युद्ध अभियानों तथा विजयों का विवरण ग्वालियर प्रशस्ति अभिलेख से प्राप्त होता है।

मिहिर भोज ने राजसत्ता सम्भालने के बाद अपने राज्य की सैन्य शक्ति को पुनर्गठित किया और मेवाड़, राजपूताना, लाट, काठियावाड़ आदि के प्रदेशों को विजित किया। फिर बुन्देल खण्ड को पुनर्विजित कर पालों से उसे छीन लिया। इसी तरह उसने कन्नौज को पुनर्विजित कर उस ऐतिहासिक संघर्ष का अन्त कर दिया, जिसे कन्नौज की प्रभुता के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष के नाम से जाना जाता है। कन्नौज से आगे बढ़ते हुए उसने मुद्गलगिरि (मुंगेर) में पालों को अन्तिम रूप से पराजित कर मध्य भारत, मगध, अंग तथा कलिंग पर आधिपत्य स्थापित किया। इस विजय की स्मृति में उसने दक्षिण बिहार में भोजपुर नामक नगर की स्थापना की। पालों को पूरी तरह पराजित करने के बाद उसका एक मात्र पुश्तैनी दुश्मन राष्ट्रकूट बचा था। मिहिर भोज ने अपने युद्ध अभियान के प्रारम्भिक दौर में राष्ट्रकूटों से मालवा और काठियावाड़ छीन लिया था। मिहिर भोज ने जब नर्मदा पार करने की कोशिश की तो, उसके समकालीन राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष ने मिहिर भोज को नर्मदा तट पर ही रोक दिया। यह अनिर्णीत युद्ध था, इसलिए

दोनों राजाओं के विजय के दावों सम्बन्धी अभिलेख प्राप्त होते हैं। इस युद्ध का परिणाम जो भी रहा हो, किन्तु इतना तय है कि मिहिर भोज ने राष्ट्रकूटों को अपने घर के अन्दर रहने को बाध्य कर दिया और पालों की तरह उत्तर भारत की राजनीति में राष्ट्रकूटों का भी पत्ता अन्तिम रूप से काट डाला। इस प्रकार मिहिर भोज ने कन्नौज को केन्द्र बनाकर अपने साम्राज्य का चतुर्दिक विस्तार किया। उसका साम्राज्य सिंध से कलिंग और हिमालय से विन्ध्य को पार करते हुए नर्मदा तक फैला हुआ था। इतिहासकार अल्तेकर के शब्दों में, "प्रतिहारों के अधीन कन्नौज पुनः भारतीय राजनीति और संस्कृति का केन्द्र बन गया।"

मिहिर भोज साम्राज्य निर्माता ही नहीं था, अपितु एक कुशल संगठनकर्ता भी था। अपने सुयोग्य सेनापतियों, मंत्रियों तथा सामन्तों एवं अधीन राजाओं के सहयोग से कन्नौज में शक्तिशाली केन्द्रीय सत्ता की स्थापना की जिसकी सम्पूर्ण साम्राज्य के दूरस्थ एवं सीमावर्ती इलाकों तक पूर्ण नियंत्रण था। अरब यात्री सुलेमान के अनुसार उसके सामन्त मंत्री तथा सैनिक सभी स्वामिभक्त और ईमानदार थे। मतलब है कि यह भारतीय इतिहास का सामन्तवादी दौर था। अतः यह कहना मुश्किल है कि उसके प्रत्यक्ष नियंत्रण में कौन-कौन प्रदेश थे। वस्तुतः उसने स्वामिभक्त सामन्तों की सहायता से साम्राज्य पर नियंत्रण रखा और प्रजा की सुख सुविधा का ख्याल रखा। वह सहिष्णु वैष्णव धर्मावलम्बी था और अन्य धार्मिक पंथों का आदर करता था किन्तु वह इस्लाम को पसन्द नहीं करता था। उसी ने सिन्ध से अन्तिम रूप से अरबों को खदेड़ा था।

मिहिर भोज प्रथम ने लम्बे समय अर्थात् 45 वर्षों तक शासन किया। उसके संरक्षण में कन्नौज एक बार फिर से उत्तर भारत की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक राजधानी बनी और मिहिर भोज ने एक ही साथ विक्रमादित्य चन्द्रगुप्त और हर्षवर्द्धन की यादों को ताजा कर दिया।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर.